Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

रीवा जिले के आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान

शोध–निर्देशक
डॉ. भावना साहू
सहा. प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्नातकोत्तर (स्वशासी एवं उत्कृष्टता) महाविद्यालय
रीवा (म.प्र.)

शोधार्थी
सीमा मिश्रा
शोध छात्रा, अर्थशास्त्र

सारांश

रीवा जिले की कृषि व्यवस्था अविकसित और पिछड़ी हुई है इसमें अनेक प्रकार की असमानताएँ देखने को मिलती है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि की इन असमानताओं के लिए कई आर्थिक सामाजिक एवं भौगोलिक परिस्थितियाँ उत्तरदायी हैं। यहाँ का अधिकांश कृषक वर्ग भूमिहीन है। पर्वत और मैदान तीन प्रकार के भूखण्ड मिलते है। इन सभी भूखण्डों की मिट्टियाँ कई प्रकार की हैं जिसके कारण कृषि कार्य में कुछ विभिन्न प्रकार की तकनीक एवं सावधानी आवश्यक है। इसके अन्तर्गत कृषि व्यवस्था में अनेक कार्यो जैसे कृषि कार्य का संचालन, कृषि आंकलन, खेतों की जुताई, खाद एवं सिंचाई आदि कार्यो का निर्धारण होता

रीवा जिला दक्षिण में कैमोर श्रृंखला तथा उत्तर में विंध्याचल श्रृंखला के बीच में स्थित पठारी भू–खण्ड है। जिले में 3 कृषि अनुविभाग तथा 9 विकासखण्ड है। इसके अतिरिक्त 2 सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी तथा 1 मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला कार्यरत है। जिले की प्रमुख नदी बीहर, टमस है। जिला 24.18 से 25.12 अक्षांश (उत्तर), 81.02 से 82.20 देशांश (पूर्व) तथा समुद्र तल से ऊँचाई 715 मीटर है। जिले में 2806 कुल ग्राम है जिसमें से 2352 ग्राम आबाद तथा 456 ग्राम वीरान हैं।

रीवा जिले का अधिकतम तापमान 41 डिग्री से.ग्रे. तथा न्यूनतम 7 डिग्री से.ग्रे. है। अधिकतम आर्द्रता 73% तथा न्यूनतम आर्द्रता 47% है। अधिकतम सूर्य का प्रकाश 10.8 घण्टे और न्यूतम 8 घण्टे है। जिले में कुल 23% सिंचाई होती है। यहाँ का भू–खण्ड पठारी एवं ऊँचा–नीचा होने के कारण फसलों की अपेक्षित उत्पादकता नही मिल पाती है। जिले में सिंचाई क्षमता में वृद्धि, कम लागत कृषि को बढ़ा कर ही फसलों की अपेक्षित उत्पादकता प्राप्त की जा सकती है। जिसके लिए सतत् प्रयास प्रारंभ है।

रीवा जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 59349 है। वर्ष 2017–18 में जिले क वन क्षेत्र 7000 हेक्टेयर है कृषि के लिए जो उपब्ध रही है। वह 9020 हेक्टेयर, अन्य अकृषि भूमि पड़ती शालि नहीं 1307 हेक्टेयर, कृषि योग्य भूमि 1831

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

हेकटेयर है। पड़ती भूमि 3680 हेक्टेयर क्षेत्र शुद्ध बोया गया क्षेत्र 36511 हेक्टेयर है। द्विफसलीय क्षेत्र 14916 हेक्टेयर हैं रीवा जिले का कुल बोया गया क्षेत्र 50527 हेक्टेयर हैं जिले में सबसे अधिक भौगोलिक क्षेत्र हनुमना विकासखण्ड में 96075 हेक्टेयर है तथा सबसे अधिक वन क्षेत्र भी त्योथर विकास में 31325 हेक्टेयर है। सबसे अधिक कृषि योग्य भूमि हनुमना विकास खण्ड में 2827 हेक्टेयर है तथा सबसे अधिक पड़ती भूमि भी हनुमना विकास खण्ड में 160657 हेक्टेयर है। कुल बोया गया क्षेत्र सबसे अधिक हनुमना तसहील में 45080 हेक्टेयर है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोत जिला सांख्यकीय कार्यालय रीवा, कृषि विस्तार अधिकारी रीवा एवं भू –मण्डल कार्यालय रीवा से प्राप्त किए गए हैं।

कृषि उपकरण–

कृषि में प्रयुक्त होने वाले उपकरण एक दूसरे से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित होते है। इनका आकार छोटा तथ अविकसित होता है। इसके साथ ही ये प्रायः परम्पागत एवं रूढ़िवादी हल्के एवं अपर्याप्त हैं। फलस्वरूप इनकी कार्यक्षमता की अपेक्षाकृत काफी कमी होती है। इनमें प्रमुख कृषि उपकरण, हल जुआँ, हंसिया, खुरपी, कुदाली, फावड़ा, अखैनी, पॉचा आदि हे। बैलों का उपयोग खेत जोतने एवं फसलों की गहराई में होता है। वायु का प्रयुक्त प्रयोग ओसाई (अन्न और भूसा अलग करने की प्रक्रिया) हेतु किया जाता है। इस प्रकार आज भी अधिकतर यहाँ की कृषि प्रविधि शताब्दियों से पुरानी है। आज भी यहाँ कृषि कार्य लकड़ी के बने हुये हलों का स्थान सर्व प्रमुख हैं तथा नवप्रवर्तित कृषि यंत्रों का प्रयोग शनै–शनैः लोकप्रिय हो रहा है।

कृषि उपरकण के आधार पर रीवा जिले में वर्ष 2017–18 में हल की संख्या लकड़ी का हल 6375, लोहे का हल 78, बैलगाड़ी 82 है, तेल पम्प 635, विद्युत पम्प 2474, टैक्टर्स 1228, घानिया शक्ति चलित गन्ना चरखी 37, बैल चलित 83 है। वर्ष 2017 में इस गन्ना चरखी की संख्या बहुत कम हुई है जो क्रमशः 37 व 43 है। जो क्रमश इस प्रकार है– लकड़ी के हल की संख्या कम हुई है। जो घटकर 9200 हो गई हैं। सबसे अधिक लकड़ी का हल तहसील त्योथर में 2754 है। सबसे कम सिरमौर में 6002 है। लोहे का हल सबसे अधिक विकासखण्ड हनुमना में 443 है।

बैलगाड़ी सबसे अधिक सिरमौर तहसील में 523 है। इसके अलावा सिंचाई पम्प में तेल से चलने वाले पम्पों की संख्या सबसे अधिक त्योंथर में 1242 है। तथा विद्युत पम्पों की सबसे अधिक संख्या त्योथर ही 5228 है। रीवा जिले में ट्रैक्टर्स की सबसे अधिक संख्या त्योंथर तहसील में 1356 है। तथा सबसे कम विकासखण्ड मऊगंज मे 1, गन्ना चरखी में शक्तिचलित गन्ना चरखी की सबसे अधिक संख्या विकासखण्ड हनुमना में 38 है। तथा सबसे कम मनगवां में दो है। बैल चलित गन्ना चरखी सबसे अधिक रीवा में है जिसकी संख्या 43 है सबसे कम तहसील मनगवां में है। इसके अलावा रायपुर, गुढ़, जवा, मऊगंज, नईगढ़ी इन विकासखण्डों में इनकी संख्या नगण्य हैं।

कृषि वर्ष का प्रारंभ के आगमन के पूर्व जून के द्वितीय सप्ताह (ज्येष्ठ मास के अन्तिम दिनों) से प्रारंभ हो जाता है। प्रायः 1 जून से 15 जून के आस–पास मृगशिरा, आद्रा नक्षत्र की शुरूआत होती है। इस नक्षत्र के प्रारंभ होते ही कृषक खेतों में खरपतवार एवं कूड़ा करकट आदि खादें प्रारंभ कर देते है। इससे स्पष्ट होता है कृषक पूरे वर्ष को 27 नक्षत्र में विभक्त करते है। पुर्नवास तथा पुष्य नक्षतों (जुलाई से मध्य अगस्त) तक सभी खरीफ फसलें धान, कोदौ, मक्का, ज्वार, अरहर इत्यादि बोयी जाती है। अश्लेषा तथा मघा नक्षत्रों में (अगस्त माह) खरीफ फसलों की निदाई–गुड़ाई का कार्य चलता है। मघा, पूर्वा, उत्तरा, तथा हस्त नक्षत्रों में रबी फसलों के लिये खेतों की जुताई तथा हरपटा आदि का कार्य होता है। लगभग इसी समय हस्त, चित्रा एवं उत्तरा में नक्षत्रों (अक्टूबर) में असली रबी तिल की बोनी की जाती है।स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा एवं मूल नक्षत्रों (नवम्बर, दिसम्बर) में खरीफ फसलों की गहाई–कटाई आदि का कार्य होता है यह समय कृषि कलेण्डर में अत्यंत महत्वपूर्ण समय होता है। स्वाती नक्षत्र (नवम्बर प्रथम सप्ताह) के अंतिम चरण से रबी फसलों, गेहू, चना, मसूर आदि की बुवाई भी प्रारंभ हो जाती हैं यह समय कृषकों के लिए अत्यंत व्यस्त समय है।

व्यापारिक फसलों उत्पादन नणग्य होने के कारण जनवरी तथा फरवरी कृषि की दृष्टि से विश्राम के महीने होते है। घनिष्ठा एवं शतनिषा नक्षत्रों (अंतिम फसलों) अलसी, राई, सरसों तथा मसूर जैसी रबी फसलों की कटाई

प्रारंभ हो जाती हैं। पूर्व भाद्रपाद एवं उत्तरपाद (मार्च माह) मूलतः रबी फसलों के पकने का समय होता है। इन्ही नक्षत्रों में चना, अरहर, बेर्‍री, गेहू आदि गेहू आदि फसलों की कटाई शनैःशनैः प्रारंभ हो जाती है।

रेवती नक्षत (मध्य अप्रैल) तक अधिक उपज देने वाले किस्म के खेत एवं द्विफसली क्षेत्रों में फसल की कटाई की जाती है। अश्वनी, भरणी नक्षत्रों, (अप्रैल–मई) में रबी फसलों की गहाई का कार्य होता है। कृषि वर्ष का अंतिम नक्षत्र रोहणी प्रायः अंतिम मई से जून के प्रथम सप्ताह तक है। इस समय कृषक खेती के कार्य से मुक्ति प्राप्त कर अन्य कार्य करते है। जैसे खपरैल घरों की मरम्मत खेतों में सड़ी गली खाद डालने आदि का कार्य करते है। इस प्रकार प्रायः सामाजिक एवं धार्मिक कार्यकलाप (विवाह संस्कार तथा पुराणों का पारायण) सम्पादित होते है। क्योंकि यह समय अपेक्षाकत विश्राम का समय होता है। अधिग्रहण क्षेत्र में सिंचाई के साधनों अभाव एवं उच्च तापमान के फलस्वरूप इन नक्षत्रों में कृषि कार्य संभव नहीं हो पाता हैं जब तक पुनः मृगशिरा नक्षत्र प्रायः 15 जून के आस–पास प्रारंभ हो जाता है। और प्रायः नवीन कृषि कार्य की तैयारियाँ प्रारंभ हो जाती है।

कृषि पद्धति–

कृषि या खेती के तरीकों को 'कृषि पद्धति' कहते है। कृषि पद्धति दो प्रकार की होती है पुरानी पद्धति। नवीन पद्धति।

पुरानी पद्धति–

इस पद्धति में हल बैलों की सहायता से परम्परागत ढंग से किसान अपने खेतों की जुताई करते बुवाई, निदाई, खाद डालना, जुताई, गहाई इत्यादि सारा कृषि कार्य हाथो से ही किया जाता है। अतः इसमें शारीरिक श्रम की अधिक आवश्यकता पड़ती है। खाद के रूप में केवल गोबर कूड़ा करकट इत्यादि ही प्रयोग सीमित मात्रा में किया जाता है। यह विधि वर्तमान समय में अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश कृषकों द्वारा कृषि कार्य में प्रयुक्त हो रही है।

नवप्रवर्तित पद्धति–

इस विधि में आधुनिक वैज्ञानिक कृषि उपकरणों से सहायता प्रायः सभी कृषि कार्य किये जाते है। खेतों की जुताई बुवाई, खाद डालना तथा कटाई, गहाई सभी कार्य ट्रैक्टर और अन्य कृषि विकसित यंत्रों की सहायता से किया जाता है। नवीन पद्धति में शारीरिक श्रम की कम आवश्यकता पड़ती है। रासायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग होता हैं। वर्षा की कमी को सिंचाई के साधनों द्वारा पूरा किया जाता है। अच्छे किस्म के बीजों का प्रयोग किया जाता है। प्रति हेक्टैयर भूमि में अधिकाधिक उत्पादन इस पद्धति की सर्वप्रमुख विशेषता है। इस विधि में सफल क्रियान्वयन हेतु निम्न तकनीक कार्य में पाये जाते है–

- मृदा परीक्षण
- भूमि उपचार
- बीजोपचार
- अच्छी एवं गहरी जोताई
- कल्चर का उपयोग
- बोने का समय
- बीज को उचित गहराई तक बोना
- लाइन में बोना

- अन्र्तवर्ती फसलें बोना (इंटरक्रांपिंग)
- समय पर सिंचाई
- सिंचित फसलों का उर्वरक पर फसलों का सही प्रयोग
- उचित बीज लाइनवार बोना
- खरपतवार नियंत्रण
- डी.ए.पी. यूरिया घोल का उचित छिड़काव
- पौध संरक्षण कार्य
- समय पर कटाई एवं गहाई
- सुरक्षित भण्डार तथा
- विपुल उत्पादन कार्यक्रम इत्यादि।

सघन कृषि अनुसंधान योजना अध्ययन क्षेत्र में 1983 से लागू है। परंतु इस विधियों को कृषकों द्वारा कार्य रूप में परणित करने में अनेकों कठिनाइयाँ सामने उपस्थित होती है। परंतु फिर भी सरकार द्वारा अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत काफी सुविधाये कृषकों को दी जा रही है।

उन्नत बीजों की बुवाई :प्रति हेक्टेर उत्पादन में वृद्धि हेतु रबी एवं खरीफ फसलों के नये बीज शासन द्वारा उपलब्ध कराये जाते है। इन परिष्कृत बीजों को खाद एवं सिंचाई के उपयोग के साथ उगाया जाता है। शासन द्वारा उत्तम किस्म के बीजों को उपलब्ध कराने हेतु अधिग्रहण क्षेत्र में सरकारी कृषि फार्म स्थापित किये जाते है। जो कृषकों को उत्तमत किस्म के बीज उपलब्ध कराता है। क्षेत्र की मिट्टियाँ सामान्यतः कम उपजाऊ है तथा पठारी क्षेत्र ज्यादा उपजाऊ है। वर्षा की अनियमितता तथा अनिश्चितता के फलस्वरूप कृषक प्रायः कई प्रकार की मिश्रित खेती करते है। प्रमुख फसलें–गेहूँ, चावल, जौ, बाजरा, अरहर, कोदौ, मसूर, उड़द आदि हैं।

सारणी क्रमांक 1

प्रमुख फसलों के अंतर्गत क्षेत्र

तहसील, विकासखण्ड	गेहूँ	धान	ज्वार	मक्का	अन्य अनाज	योग अनाज
विकासखण्ड –रीवा	18233	4951	143	4	458	23789
रायपुर कर्चु.	2817	626	44	–	60	3547
विकाखण्ड सिरमौर	7387	2888	1147	–	440	11862
गंगेव	2909	2099	840	–	277	6125
विकास खण्ड–त्योथर	15756	13221	2824	13	726	32539

विकासखण्ड–जवा	9404	7176	7193	3	1249	25025
विकासखण्ड –मऊगंज	12658	12363	477	44	493	26035
विकासखण्ड नईगढ़ी	7664	11353	1256	2	189	20564
विकासखण्ड–हनुमना	17017	24826	1575	1088	1571	46077
विकासखण्ड–सेमरिया	10761	5417	439	4	730	17351
विकासखण्ड–गंगेव	12672	5939	1338	–	258	20207

स्रोत–जिला योजना एवं सांख्यकीय कार्यालय रीवा (म.प्र.)

गेहूँ–

गेहूँ क्षेत्र की प्रथम कोटि की खाद्य फसल है जो सन् 1991–92 में 107504 हेक्टेयर क्षेत्र में यहा निराकृषित क्षेत्र का 30.51 प्रतिशत एवं कुल रबी क्षेत्र का 43.8 प्रतिशत भाग में गेहू का उत्पादन होता है। गेहू की किस्म के निर्धारण में तापमान का विशेष महत्व है। इसकों उगाते समय 15° ग्रेट तथा पकते समय 22° से 27° से. ग्रे. तक की आवश्यकता होती है इसके लिए 50 सेमी. से 75 सेमी. तक वर्षा पर्याप्त होती है। मध्यप्रदेश में गेहू का क्षेत्रफल लगभग 39 लाख 92 हजार हेक्टेयर रहा है। गेहू उत्पादन की दृष्टि से मध्यप्रदेश का भारत में चौथा स्थान है।गेहूँ की कृषि का वितरा मुख्यतः मिट्टी में संचित आद्रैता पर निर्भर करती हे। न्यूनधारण शील मिट्टियाँ अपेक्षाकृत कम वर्षा वाले क्षेत्रों में गेहूँ की कृषि सीमित है।

सर्वाधिक गेहूँ का उत्पादन नदियाँ के जलोढ़ घाटियों में होता है। यहाँ औसत 80 से.मी. से अधिक तापमान 25° से.ग्रे. से अधिक रहता है। अध्ययन क्षेत्र में गेहूँ उत्पादन में भी सभी भौगोलिक तत्वों में मिट्टी सर्वोपरि है। ऊँचे पठारी भागों में जहाँ हल्की ककरीली मिट्टियाँ मिलती है अथवा भूमि का ढाल अधिक होने के कारण पानी बह जाता है। वहाँ गेहूँ की कृषि अनुपयुक्त होती है।

मिट्टी में संचित आर्द्रता पर गेहूँ की कृषि निर्भर होने के कारण वर्षा ऋतु की थोड़ी अनियमितता उत्पादन को गंभीर रूप से प्रभावित कराती है। इसके साथ ही अक्टूबर माह अथवा शीतकालीन वर्षा का उत्पादन पर अनुकूलन प्रभाव पड़ता है। गेहूँ की फसल के उत्पादन के सम्बन्ध में यहाँ के कृषकों की लोकोक्ति पर्याप्त सार्थक हैः–''स्वाती गेहूँ आर्दा धान। नावहि कुकही नवहि घाम।।''[7]

गेहूँ की नवप्रर्तित किस्में–

सर्वाधिक प्रचलित गेहूँ की किस्में देशी है इसे 65 नम्बर भी कहते है। इसका रंग सफेद होता है। यहाँ उन्नतिशील कृषकों द्वारा नर्वदा 4, नर्वदा, 112, सुजाता तथा आर.आर. 21, एवं 306 इत्यादि किस्में असिंचित क्षेत्र में उगाई जाती है। सिंचित क्षेत्र में गेहूँ की उन्नतिशील जातियाँ–कल्याण सोना, एच.डी. (1993) सोना विकास, (एच.डी. 1553) डब्लू एच. 147, मेघदूत इत्यादि बोयी जाती है। सरकार द्वारा उन्नतशील कृषकों को आसानी से बीज उपलब्ध कराने हेतु यहाँ दो बीज बहुकरण प्रक्षेत्रों की स्थापना किया गया है। कुठुलिया रीवा में स्थापित किया है।

इन प्रक्षेत्रों से कृषकों के उन्नतिशील जातियाँ खरीफ एवं रबी की वितरिक की जाती है। कभी–कभी गेहूँ में कीट रोग तथा इल्ली का प्रकोप हो जाता है। यह अत्यधिक हानिकारक होता है शासन इसकी रोकथाम के लिए प्रतिरोधक दवाइयों का वितरण करती है।

सारणी क्रमांक 2

गेहूँ की नवप्रवर्तित किस्में

किस्म लम्बी किस्में	**अवधि दिन में**	**औसत उपज (क्विं/हें.)**	**प्रमुख विशेषताएँ**
सुजाता	125–130	15–20	शरबती, दाना चमकदार, गेरूआ सहनशील
सी.–306	130–135	15–20	शरबती, चमकदार मध्यम आकार दाना, मध्यम गेरूआ सहनीशील
जे.डबल्यू. एस–17 (स्वपनिल)	130–135	22–25	....
एच.डबल्यू–2004 (अमर)	130–135	15–20	चमकदार, गेरूआ निरोधक
बौनी किस्मे :–			
लोक –1	105–110	40–45	इसका दाना मोटा व चमकदार होता है
डबल्यू.एच.–147	115–122	45–50	मध्यम बौनी, दाना मोटा
राज–3777	120–125	45–48	दाना मोटा, बड़ा भूरा गेरूआ प्रतिरोधी, समय व देर से बोनी हेतु
एच.आई.–8498	115–120	55–60	मध्यम बौनी कठिया, दाने बड़े चमकदार
एच.आई–1418	115–120	40–45	समय व विलंब से बोनी हेतु कठिया

एच.आई.—1531	115—120	23—26	समय पर बोनी, गेरूआ प्रतिरोधी
जी.डबल्यू—273	111—115	55—60	समय पर बोनी, गेरूआ प्रतिरोधी
अजीत 401	125—130	35—40	चमकीला और आकर्षक रंग
अजीत 102	100—105	50—55	स्वादिष्ट और नरम, चपाती हेतु उपयुक्त
जी.डबल्यू—1139	96—116	44	पिछेती बोनी हेतु
जी.डबल्यू—322	112	46	पिछेती बोनी हेतु, गेरूआ प्रतिरोधी
जी.डबल्यू—173	87—100	46	पिछेती बोनी के लिए
मालवीय, डबल्यू—510	100	36	देर से बोनी हेतु गेरूआ अवरोधी
एच.डी.—2733	125	48	गेरूआ, शहनशील
एच.डी. 4672	120—125	22	समय से बोनी हेतु गेरूआ अवरोधी
एम.पी.—4010	88—120	40	समय से बोनी हेतु
मालव कीर्ति			....
ऊर्जा (एच.डी. 2864)	107	42	देर से बोनी हेतु
डी.एल—788—2	105—110	35—40	बौनी, देरी से बोनी हेतु उपयुक्त
अंकुर—केदार	110—115	40—45	मध्यम ऊंचे एवं सुगठित संरचना युक्त पौधे
बलराम 011 अंबर 28	95—100	40—45	तीन महिने से तैयार होने वाली किस्म।
रूसी	100—105	40—45	कल्लों का फुटाव बढ़िया, अधिक उत्पादन।

स्रोत–किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग जिला रीवा (म.प्र.)

चावल–

यह अध्ययन क्षेत्र की गेहूँ के बाद दूसरी प्रमुख फसल है जो निराफसली क्षेत्र के 20.8% तथा निरा खरीफ क्षेत्र में 60.8% भाग में बोयी जाती है। विगत वर्षो में चावल के उत्पादन में अपेक्षकृत ह्रास हो रहा है।यहाँ चावल कई विधियों से बोया जाता है। इनमें मुख्य (शीघ्र पकनें वाली 'झुरिया विधि') (ब) 'लेऊ' अथवा डमका विधि (स) रोपा/प्रतिरोपण विधि।चावल बोने की तीन प्रमुख विधियाँ प्रचलित हैं।[8]

झुरिया विधि या शीघ्र पकनें वाली किस्म–

इस विधि में मानसून की प्रथम बौछार (वर्षा) के साथ ही धान के सूखे बीज खेत में बिखेर दिये जाते है। तत्पश्चात् खेत में हल द्वारा जोताई करके बीज को मिट्टी में ढ़क दिया जाता है। इस विधि में अन्तिम सितम्बर या अक्टूबर सितम्बर या अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में फसल पक कर तैयार हो जाती है। इस विधि से 15% भाग पर चावल बोया जाता है।

सारणी क्रमांक 3

प्रमुख फसलों के अंतर्गत क्षेत्र कृषि एवं सिंचाई (हेक्टेयर)

वर्ष जिला तहसील विकासखण्ड	चना	तुअर	उड़द	अन्य दाले	योग अनाज
विकासखण्ड –रीवा	5161	5679	1751	3122	15713
रायपुर कर्चु.	628	910	226	575	2340
विकासखण्ड–रीवा	137	111	40	89	370
रायपुर	2289	12381	378	2852	7900
विकासखण्ड–रीवा	850	1472	200	790	3312
रायपुर	1272	2331	129	1129	4861
विकाखण्ड सिरमौर	2786	5287	1095	3933	13101
गंगेव	1357	1809	357	2926	6449
विकास खण्ड–त्योथर	6525	6948	320	13177	26970
विकासखण्ड–जवा	9571	255	219	2409	14794

विकासखण्ड –मऊगंज	3201	5699	374	5537	14811
विकासखण्ड नईगढ़ी	2481	4302	712	10372	18227
विकासखण्ड–हनुमना	4403	3640	1669	1501	11213
विकासखण्ड–सेमरिया	4174	6033	1608	1732	13547
विकासखण्ड–गंगेव	5440	3650	1433	8098	1861
रायपुर	1267	716	180	2345	4708

स्रोत–कार्यालय जिला सांख्यकीय पुस्तिका रीवा (म.प्र.)

उपरोक्त सारणी में कृषि एवं सिंचाई के अन्तर्गत दालों उत्पादन का विवरण प्रस्तुत किया गया हैं। रीवा जिलें में वर्ष 2017–18 में 5161 हेक्टेयर में चना बोया गया है। तुअर 5679 हेक्टेयर में उड़द 1751 हे. में अन्य दाले 3122 हेक्टेयर में तथा योग दाले 15713 हेक्टेयर में है। वर्ष 2017 में चना रायपुर में 628 हेक्टेयर उत्पादित किया गया तुआर 910 हेक्टेयर में, उड़द 226 हे. में अन्य दाले 575 हेक्टेर में तथा इसके अलावा दानों के आधार पर 2340 हेक्टेयर मं उत्पादन किया गया है। जिले में सबसे अधिक चना विकासखण्ड गंगेव में 5440 हेक्टेयर में बोया गया। तुअर सबसे अधिक त्योंथर में ही 6948 हे. बोई गई। तथा दालों के योग के आधार पर सबसे अधिक उत्पादन त्योंथर में 26970 उत्पादन किया गया इन सभी दालों का सबसे कम उत्पादन रीवा विकास खण्ड में किया गया है। जो इस प्रकार है–

चना 137 हेक्टेयर में, तुअर 111 हेक्टर में, उड़द 40 हेक्टेयर में, अन्य हेक्टेयर में बायी गई इसके अलावा विकासखण्ड रीवा में सबसे अधिक उड़द 1751 हेक्टेयर में उत्पादित की गई एवं अन्य दाले सबसे अधिक तहसील मऊगंज में 5537 हेक्टेयर में बोई गई।

खरीफ मौसम की तीसरी प्रमुख फसल अरहर फसल है। अरहर राज्य की प्रमुख दाल है। इसे 'तुअर' के नाम से पुकारा जाता है। तुअर उत्पादन में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है। यह यहाँ लोगों के भोजन में (अरहर) दाल एक महत्वपूर्ण अंग है। तुअर वर्षा के प्रारंभ में जुलाई माह में कपास और ज्वार के साथ बोई जाती है। किन्तु तुअर की फसल सम्पूर्ण शीतकाल के मौसम में खेतों में खड़ी रहती है इसे मार्च–अप्रैल में काटा जाता है।

सारणी क्रमांक 4

तुअर (अरहर) का क्षेत्रफल

क्र.	रा.नि. मण्डल	क्षेत्रफल (हे.मे.)	रबी क्षेत्र का प्रतिशत	निराफसली क्षेत्र का प्रति
1.	हुजर	22	1	0.2

2.	गोविन्दगढ़	118	3.4	0.8
3.	बनकुईयाँ	245	17.08	1.6
4.	रायपुर कर्चुलियान	15	0.17	0.1
5.	डेल्ही	224	4.6	1.80
6.	गुढ़	110	0.9	0.6
7.	सिरमौर	71	2.3	0.8
8.	मनगवां	22	0.7	0.15
9.	बैकुण्ठपुर	22	0.8	0.16
10.	सेमरिया	62	3.03	0.4
11.	मऊगंज	68	1.4	1
12.	चाक	110	2.03	0.8
13.	त्योंथर	2	0.4	0
14.	रायपुर सोनौरी	90	2.41	0.6

स्रोत–कार्यालय भू–अभिलेख रीवा (म.प्र.)

मसूर–

मसूर रबी मौसम की फसल है यहाँ मसूर की दाल को भोजन के साथ प्रयोग में लाते है। इसका उत्पादन रीवा में 30.8 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में बोयी गयी है। उन्नत किस्मों के बीज निम्न प्रकार से हैं–

सारणी क्रमांक 5

मसूर की नवप्रवर्तित किस्में

किस्म	**अवधि दिन में**	**पैदावार क्वि/हे.**	**विशेषतायें**
जवाहर–1	110–115	10–14	उकटा अवरोधी
जवाहर–3	110–115	10–15	उकटा अवरोधी, दाना बड़ा।

एल 4076	115—125	10—15	गेरूआ वा उकटा अवरोधी
के—75	115—120	10—15	उकटा अवरोधी, दाना छोटा
आई.पी.	110—115	10—15	दाना मध्यम आकार का
एल—81			गेरूआ वा उकटा अवरोधी

स्रोत—किसान कल्याण तथा कृषि कल्याण विभाग जिला रीवा (म.प्र.)

बुआई का समय एवं तरीका—अक्टूबर का मध्य समय बुआई के लिए उपयुक्त समय हैं। बुआई में देरी होना उपज में कमी लाती है। 15 नवम्बर तक, मसूर फसल की बुआई देरी अवस्था में की जा सकती हैं। मसूर की कतार से कतार की दूरी 25—30 से.मी. एवं 5—7 से.मी. गहरा बोना चाहिए। मसूर का उत्पादन काली मिट्टी में अधिक होता है तथा इसमें सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं होती है। मसूर को कुछ ऊंचे स्थानों पर उचित रहता है। मसूर का उत्पादन रीवा जिले के पश्चिम दिशा में अधिक होता है क्योंकि इस क्षेत्र में काली मिट्टी पर्याप्त मात्रा में पायी जाती है। बहुरीबाँध, रघुनाथपुर, सतोहरी, बीड़ा सेमरिया, आदि क्षेत्रों में समूर का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है।

राई सरसों–

यह अपेक्षाकृत कम महत्व की तिलहन फसल है। इसके लिए काली दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। इस प्रकार राई–सरसों की अच्छी उपज हेतु गेहू उत्पादन क्षेत्रों में हो सकती है। लेकिन यहाँ विभिन्न प्रकार की मिट्टीयों में उगाई जाती है जैसे बलुई मिट्टी, कंकरीली मिट्टी तथा लैटराइट मिट्टी इत्यादि।

सारणी क्रमांक 6

राई सरसों की नवप्रवर्तित प्रजातियाँ

किस्म तोरिया	अवधि दिन	उपज क्वि./हे.	विशेष गुण
भवानी	75–80	10–12	तेल 42%
टी–9 व टी–6	85–100	10–15	तेल 43%
जे.एम.टी.–689	85–90	5–10	तेल 42%
सरसों	–	–	रग कत्थई
जवाहर सरसों (जे.एम.–1)	125–130	20–21	रंग काला भूरा, तेल 41.2%
स्वर्ण ज्योति	123–130	13–14	तेल 38 से 42%
वसुंधरा	130–135	13–14	तेल 38–40%
रागिनी	100–136	15–16	एफिड सहनशील
पूसा–बोल्ड	110–145	10–12	तेल 44%
उर्वसी	125–130	17–18	बिलाइट सहनशील

स्रोत–कृषि विभाग से प्राप्त जानकारी।

अन्य उन्नतशील किस्में –जे.एम.–2 (जे.एम.डब्लू.आर.–941–1–2), जे एम.–3 (जे.एम.एम. 915), पूरा महक (जे.डी.–6), माया (आर.के.–9902), आर.सी.सी.–4 नीलम (गोभी सरसों) आदि है। स्रोत –प्रमुख फसलों के उत्पादन की उन्नत तकनीक पत्रिका। अध्ययन क्षेत्र में राई–सरसों का सर्वाधिक क्षेत्र त्योंथर तहसील के रायपुर सोनौरी मण्डल में मिलता है। अध्ययन क्षेत्र का द्वितीय राई–सरसों क्षेत्र में मऊगंज, सिरमौर तथा चाक ना.नि मण्डल है। जो टमस नदी के कछार में राई सरसों की कृषि की जाती है।

संदर्भ–

1. जिला सांख्यकीय पुस्तिका, जिला रीवा, वर्ष 2011
2. जिला सांख्यकीय पुस्तिका, जिला रीवा, वर्ष 2011
3. भू अभिलेख कार्यालय, रीवा
4. भू अभिलेख कार्यालय, रीवा
5. जिला कृषि विस्तार अधिकारी, जिला रीवा
6. भू अभिलेख कार्यालय द्वारा प्राप्त जानकारी
7. व्यक्तिगत अवलोकन से प्राप्त जानकारी
8. किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग जिला रीवा (म.प्र.)
9. किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग जिला रीवा (म.प्र.)
10. कृषि विस्तार अधिकारी से प्राप्त जानकारी